युवा सशक्तिकरण पर स्वामी विवेकानन्द के विचारो की प्रासंगिकता सारांश

दीप्ति चतुर्वेदी,

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, कॉलेज शिक्षा विभाग, राजकीय बांगड़ महाविद्यालय, पाली

शोध सारांश

किसी भी देश के युवा उसका भविष्य होते हैं, उन्हीं के हाथों में देश की उन्नति की बागड़ोर होती है, आज के परिदृश्य में जहाँ भारत में चारों ओर समस्याओं का बोलबाला है, ऐसे माहौल में देश की युवाशक्ति को जागृत करना व उन्हें देश के प्रति कर्तव्यों का बोध करना अत्यन्त आवश्यक है। विवेकानन्द एक ऐसे व्यक्तित्व हैं जो प्रत्येक युवा के आदर्श बन सकते है। उन्होनें युवाओं का आह्वान करते हुए कहा था कि निराशा, कमजोरी, भय तथा ईर्ष्या युवाओं के सबसे बड़े शत्रु है। उन्होने ने युवाओं को जीवन में लक्ष्य निर्धारित करने के लिए स्पष्ट संकेत दिया और कहा कि तुम सदैव सत्य का पालन करो, विजय तुम्हारी होगी। युवाओं से स्वामी विवेकानंद का प्रेम अपार था। वे, युवावस्था को संकल्प तथा भावनाओं से भरपूर अवस्था मानते थे। उन्हें ऐसे तेजस्वी युवा समुदाय की जरूरत थी जो देश के पुनर्गठन के लिए अपने प्राणों की बलि दे सकें । उनका मत था कि दिल दिमाग तथा हाथ का सम्यक् और संतुलित विकास होना चाहिए । वे युवकों में लोहे सदृश्य मांसपेशियों तथा फौलादी दृढ़ता के हिमायती थे।

मुख्य शब्द : *स्वामी विवेकानन्द, युवा, राष्ट्र निर्माण, लक्ष्य, चुनौतिया, चरित्रवान, उत्थान।*

प्रस्तावना

स्वामी विवेकानंद का कहना था आज के युवा समाज को, जिसमें देश का भविष्य निहित है और जिसमें जागरण के चिह्न दिखाई दे रहे हैं, अपने जीवन का एक उद्देश्य ढूंढ लेना चाहिए । हमें ऐसा प्रयास करना होगा ताकि उनके भीतर जगी हुई प्रेरणा तथा उत्साह ठीक पद पर संचालित हो। नहीं तो शक्ति का ऐसा अपव्यय या दुरुपयोग हो सकता है, जिससे मनुष्य की भलाई के स्थान पर बुराई होगी। स्वामी विवेकानंद ने कहा कि भौतिक उन्नति तथा प्रगति अवश्य ही प्रशंसनीय है परंतु देश जिस अतीत से भविष्य की ओर जा रहा है । उस अतीत को अस्वीकार करना निश्चित ही निर्बुद्धिता का परिचायक है। युवा वर्ग में यदि अपने विगत इतिहास के प्रति कोई चेतना ना हो तो उनकी दशा प्रवाह में पड़े लंगरहीन नाव के समान होगी। ऐसी नाव कभी भी अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंचती।

स्वामी जी ने बारबार कहा कि अतीत की नीवं के बिना सुदृढ भविष्य का निर्माण नहीं हो सकता। अतीत से जीवन शक्ति ग्रहण करके ही भविष्य जीवित रहता है। जिस आदर्श को लेकर राष्ट्र अभी तक बचा हुआ है, वर्तमान युवा पीढ़ी को उसी आदर्श की और परिचालित करना होगा, ताकि वे देश के महान् अतीत के साथ सामंजस्य बनाकर लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सकें।

स्वामी जी ने कहा कि युवा वर्ग के सम्मुख एक लक्ष्य स्थापित करना होगा। इस और ध्यान देना होगा कि युवक गण, उत्साह तथा प्रेरणा के साथ अपनी क्षमता का सदुपयोग कर सकें। युवा शक्ति के भीतर जो सक्रियता एवं उद्दाम भाव देखने में आता है, उसकी उपेक्षा नहीं

की जा सकती । वे कुछ करने को उत्सुक हैं और यह उसी का लक्षण है। उनके नेतृत्व का भार जिनके ऊपर है उन वयस्क लोगों को इस विषय में सोचना होगा। युवकों को केवल विधि निषेध की सीमा में , आबद्ध रखकर, उन्हें स्पष्ट मार्ग दिखाना होगा।

अध्ययन का उद्देश्य

1. वर्तमान भारत में युवाओं की स्थिति क्या है ?
2. युवाओं की प्रमुख समस्याएं क्या है ?
3. इन समस्याओं के प्रसंग में स्वामी जी की प्रमुख शिक्षाएं क्या है ?
4. स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाएं वर्तमान युवाओं को सशक्त बनाने में कितनी प्रासांगिक है ?

युवा सशक्तिकरण पर स्वामी विवेकानन्द के विचारो की प्रासंगिकता

युवावस्था अथाह ऊर्जा और शक्ति के भंडार की अवस्था है। युवावस्था मानव जीवन का बसंत काल कहलाता है। यह अवस्था ऊर्जा, शक्ति, उत्साह और उमंग से भरपूर है। यह काल मनुष्य के बचपन और वृद्धावस्था का संधि काल है। युवावस्था को भविष्य के निर्माण की आधार शिला कहा जा सकता है। इस अवस्था का निर्माण जिस प्रकार का होगा आने वाला जीवन उसी प्रकार का होगा।

यदि इस अवस्था की आदतें सही होंगी तो शेष जीवन को उपयोगी और गरिमामय तरीके से जिया जा सकेगा । युवावस्था में यदि जीवन निर्माण का सही मार्गदर्शन मिल जाए तो जीवन सही रूप में गढ़ाजा सकेगा और व्यक्ति द्वारा अनेक उपलब्धियां प्राप्त की जा सकेंगी। जो एक अच्छे समाज के निर्माण में सहायक होगी।

हमारा देश युवा राष्ट्र है। देश के सर्वांगीण विकास में युवाओं की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। क्योंकि युवा शक्ति के साथ समग्र विकास की अवधारणा जुड़ी हुई है। क्षेत्रफल की दृष्टि से दुनिया के सातवें सबसे बड़े देश भारतमें विश्व के सबसे ज्यादा 66 प्रतिशत युवा, 35 वर्ष से भी कम आयु के हैं, और कुल आबादी का 50 प्रतिशत 25 वर्ष से भी कम आयु के हैं। 121 करोड़ आबादी वाले इस देश में आधी से ज्यादा जनसंख्या युवा वर्ग की है। आने वाले 10 वर्षों में भारत में युवा जनसंख्या 60 करोड़ तक हो जाएगी। युवा देश का वर्तमान तो है ही। साथ ही अतीत और भविष्य का सेतु भी है। देश के युवाओं ने अंतरिक्ष, सूचना प्रौद्योगिकी कला व साहित्य, शिक्षा, चिकित्सा, स्वास्थ्य, इंजीनियरिंग, उद्योग, व्यवसाय, खेलकूद जैसे अनेक क्षेत्रों में और दुनिया के हर महाद्वीप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। इस युवा शक्ति ने चुनौतियों को आगे बढ़कर स्वीकार किया है। परिस्थितियों को अपने अनुकूल ढाला है। और अपनी ऊर्जा, उत्साह और मेघा के बल पर अनगिनत उपलब्धियां प्राप्त की है। इसीलिए सारी दुनिया आशाभरी दृष्टि से नए भारत की ओर देख रही है।

आजादी के आंदोलन में युवाओं का पूर्ण योगदान रहा । स्वतंत्रता संग्राम में युवाओं ने असहयोग आंदोलन को जन जन तक पहुंचाया। विदेशी वस्त्रों, वस्तुओं का बहिष्कार किया गया। सरकारी उपाधियों को त्यागा गया। सरकारी स्कूलों, कॉलेजों और अदालतों का बहिष्कार किया गया। इस समय काशी विद्यापीठ, गुजरात विद्यापीठ, महाराष्ट्र विद्यापीठ, जामिया मिलिया विश्वविद्यालय आदि शिक्षण संस्थाओं की स्थापना हुई। जिनमें बड़ी संख्या में छात्रों ने सरकारी शिक्षण संस्थाओं को छोड़कर प्रवेश लिया। स्वतंत्रता के 28 वर्ष पश्चात देश में आपातकाल लगा। अभिव्यक्ति की आजादी प्रतिबंधित की गई।तब जयप्रकाश नारायण की आवाज पर युवा

शक्ति संपूर्ण क्रांति की वाहक बनी। युवाओं द्वारा इतनी उपलब्धियों के बावजूद आज राह आसान नहीं है। वैश्वीकरण एवं पाश्चात्य संस्कृति के नकारात्मक पहलू एवं शिक्षा व्यवस्था ने तथा सामाजिक मूल्यों के क्षरण ने युवाओं को दिग्भ्रमित किया है।

युवा वह शक्ति है, जो असंभव को संभव, निराकार को साकार और अमूर्त को मूर्त रूप में तब्दील करने की योग्यता और क्षमता रखती है। किंतु विडंबना का विषय है कि वर्तमान में भारतीय युवा शक्ति हताशा, अवसाद और तनाव के दौर से गुजर रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 15 से 29 वर्ष की उम्र के बच्चों में आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ रही है। भारत में इस उम्र के विद्यार्थियों की संख्या बढ़ रही है । विचार योग फाउंडेशन ने भारत की विद्यार्थियों की मनोदशा पर विस्तृत अध्ययन कर बताया है कि 42 प्रतिशत विद्यार्थी उच्च लक्ष्यों के कारण निराश है। 20 प्रतिशत विद्यार्थी विभिन्न कारणों से आक्रामक हैं । 15 प्रतिशत विद्यार्थी आशंकित हैं । और 6 प्रतिशत विद्यार्थी में जीवन के प्रति निराशा है। वर्तमान में युवा वर्ग पर नकारात्मक खबरों का अत्यधिक प्रभाव दृष्टिगोचर हो रहा है। मीडिया ऐसे समाचारों की सुर्खियां बनाता है। जिसमें मानवीय संवेदनाओं को वरीयता नहीं मिलती। इस कारण युवा वर्ग में निराशा का भाव जागृत होने लगता है।

युवाओं को राह दिखाते हुए स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि समाज अपराधियों की सक्रियता की वजह से गर्त में नहीं जाता, बल्कि अच्छे लोगों की निष्क्रियता इसकी असली वजह है। इसीलिए नायक बनो। हमेशा निडर रहो। यह डर है, जो दुख लाता है, और भय की वजह है । स्वामी विवेकानंद ने कहा है कोई एक विचार लो उसे अपनी जिंदगी बना लो । उसी के बारे में सोचो और सपने में भी वही देखो। उस विचार को जियो। अपने शरीर के हर अंग को उस विचार से भर लो। सफलता का रास्ता यही है। जब तुम कोई काम कर रहे हो, तो फिर किसी और चीज के बारे में मत सोचो। इसे पूजा की तरह करो। इस दुनिया में आऐ हो तो अपनी छाप छोड़ कर जाओ। ऐसा नहीं किया तो फिर तुममें और पेड़, पत्थरों में क्या अंतर रह जाएगा । वे भी पैदा होते हैं, और नष्ट हो जाते हैं। स्वामी जी का युवाओं को उपदेश था कि उनको शरीर और मन की दृढ़ता उत्पन्न करनी चाहिए। उनकी शिक्षा योजना का उद्देश्य सर्वांगीण मनुष्य का निर्माण करना था। वे ऐसे युवक थे जिन्होंने अपनी विद्वत्ता से पश्चिमी जगत को चौंका दिया और एक आध्यात्मिक और समतामूलक समाज का दर्शन और राष्ट्रप्रेम की ज्वाला भारत के युवाओं में जला दी। आज देश में अनेक विभेदकारी शक्तियां अपनी राष्ट्र विरोधी मंशाओ को जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद, संप्रदायवाद के नाम पर व्यक्त करती रहती हैं। स्वामी जी ने वेदांत, धर्म, भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार हेतु देशभर के युवाओं का आह्वान किया। उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त समानता की भावना के प्रति लोगों को सचेत किया। जिससे राष्ट्र की अखंडता और एकता सुनिश्चित हो सके ।

वस्तुतः युवाओं के समक्ष हर देश काल में दो तरह की चुनौतियां होती हैं जो उनके समक्ष स्थापित वर्तमान होता है उसके सामने मजबूत और अधिक उपयोगी वैचारिक विकल्प का प्रादुर्भाव तथा दूसरी अपने विचार की चुनौतियों का व्यावहारिक समाधान। दोनों ही स्तरों पर युवा पीढ़ी की सजगता परम आवश्यक है। युवाओं से वरिष्ठ जनों के अनुभवों का अधिक परिपक्व होना स्वाभाविक है। किंतु फिर भी युवामन बेहतर विकल्प की तलाश में संलग्न रहता है ओर उसे निरर्थक नयेपन के नाम पर पुराने की आलोचना का शिकार भी होना पड़ता हैं, इसीलिए यहां स्वामी विवेकानंद के विचार और भी प्रासंगिक जान पड़ते हैं। स्वामी विवेकानंद युवाओं को सदैव तर्कपूर्ण चिंतन के

लिए और विज्ञान सम्मत चिंतन के लिए प्रेरित करते थे । उनकी मान्यता थी कि विज्ञान और धर्म दोनों ही मनुष्य को बंधन मुक्त करते हैं, एक तो अज्ञान से और दूसरा सांसारिक आसक्ति से। सामान्यतः व्यक्ति अपने जीवन की असफलताओं का आक्षेप दूसरों पर लगाता है अथवा भाग्य पर करता है या फिर ईश्वर पर डाल देता है। स्वामी जी कहते थे वह व्यक्ति कायर और मुर्ख है जो कहता है यह मेरा भाग्य है। परंतु शक्तिशाली वही होता है जो उठकर कहता है, मैं अपना भाग्य स्वयं बनाऊंगा।

स्वामी विवेकानंद इस तथ्य के प्रति सचेत थे कि स्वतंत्रता भारत की सभी समस्याओं का समाधान नहीं करेगी। यह नए जीवन की ओर पहला कदम अवश्य होगा। परंतु साथ ही देशभक्ति की भी आवश्यकता पड़ेगी।

स्वामी जी तत्कालीन आधुनिक लड़कों से भी बहुत अधिक निराश थे। वे कहते थे कि वे शरीर से निर्मल, मस्तिष्क से बुद्धिहीन और हृदय से साहसी नही है। मेरी इच्छा लोहे की मांसपेशियों, इस्पात के स्नायु ओर वज्र के पदार्थों से निर्मित मस्तिष्क वाले युवकों की है। जिनमें शक्ति और पोरुष, क्षत्रियों की वीरता और ब्रह्म तेज विधमान हो। स्वामी जी राष्ट्र निर्माण शब्द का प्रयोग ना करके, हमेशा मनुष्य निर्माण शब्द का प्रयोग करते थे। वे भारत के युवाओं के लिए जागृति का राष्ट्रगान बन गए। उनका कथन ''जागो और तब तक न रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो'', विश्व आह्वान बन गया ।

स्वामीजी ने युवकों का आह्वान करते हुए कहा कि भारत के युवाओं तुम्हें झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का अनुसरण करना है। जिसकी वीरता की अंग्रेजों ने भी सराहना की। तुम दूसरे देशों के सद्गुणों को ग्रहण करो। उनकी तकनीकी कौशल और जीवन के गुणों को अपने में पैदा करो। स्वामी जी की युवाओं को कही गई प्रेरणास्पद बातें, आज भी उतनी ही प्रासंगिक है, क्योंकि युवा वर्ग में देश का भविष्य नीहित है। हमें ऐसे प्रयास करने होंगे कि युवा पीढ़ी का उत्साह सकारात्मक और समुचित दिशा में संचालित हों । अन्यथा शक्ति का ऐसा दुरुपयोग होगा की भलाई के स्थान पर नुकसान हो जाएगा। जिस आदर्श को लेकर स्वामी जी ने युवा पीढ़ी को निर्देशित किया वह भारत को एक महान राष्ट्र बनाने की दृष्टि थी । उन्होंने भारत के युवाओं के जीवन के एक निश्चित लक्ष्य को निर्धारित कर उनमें उत्साह, उर्जा और क्षमता का विवेकपूर्ण उपयोग करने का आह्वान किया ।

देश के युवाओं को विभिन्न बुराइयों से दूर कर देश के विकास में उनके योगदान को लेने के लिए स्वामी जी ने दो चीजों पर जोर दिया, एक तो चरित्र और दूसरा रचनात्मकता। स्वामी जी के अनुसार चरित्रवान मनुष्य ही उन्नति की ओर बढ़ता है और चरित्रहीन व्यक्ति हमेशा अधोगति को प्राप्त करता है। चरित्रवान व्यक्ति इतिहास का निर्माण करता है और मानवता की आशा, सांत्वना, भलाई और प्रेरणा बनता है। वही चरित्रहीन मनुष्य समाज में कठिनाइयां, संघर्ष, चिंता और दुःख उत्पन्न करता है। स्वामी विवेकानंद का यह सपना था कि भारत विश्व शिखर पर आरूढ़ होगा। इसके लिए उन्होंने युवाओं को इसका माध्यम बताया और उन्होंने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा।

भारत का यह अद्भुत सौभाग्य कि यहां की युवा जनसंख्या विश्व में सर्वाधिक है किंतु दुर्भाग्य से स्वतंत्रता प्राप्ति के लंबे अंतराल के बाद भी भारत के पास में अपनी अपेक्षाओं के अनुरूप युवाओं के व्यक्तित्व पोषण, शिक्षण प्रशिक्षण व नियोजन की कोई व्यवस्था नहीं हो सकी है। समुचित प्रशिक्षण के अभाव में आज के युवा दिग्भ्रमित हो रहे हैं, और स्वयं के समाज तथा राष्ट्र की गरिमा के हनन का साधन बन रहे हैं। ऐसे युवाओं को भटकाव से दूर कर युवाओं से जुड़ी राष्ट्र की इन सभी समस्याओं के

समाधान का उपाय स्वामी विवेकानंद के शब्दों में यही है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था मूल्य आधारित शिक्षा हो जिसमें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक उत्कर्ष की क्षमता हो। शिक्षा में युवाओं की शारीरिक क्षमताओं के पूर्ण विकास की व्यवस्था हो। युवा मन इस प्रकार प्रशिक्षित हो कि वह अपने कर्तव्यों और विवेक द्वारा रचनात्मक उपायों से समाजकी समस्याओं के समाधान की दिशा में अपनी उर्जा को लगाए। युवाओं में उत्साह, अनालस्य, कार्य विधि का ज्ञान, व्यसन मुक्ती, धैर्य, कृतज्ञता, आत्मविश्वास, विनम्रता आदि व्यक्तिगत गुणों के विकास की अपेक्षा है । युवाओं के मन और मस्तिष्क में यह विचार विकसित करना होगा कि औद्योगिक विकास की कुंजी धन यंत्र औद्योगिकी नहीं अपितु कार्य कुशल व्यक्ति है। साधन से अधिक सत्व आवश्यक है।

किसी भी समाज के उत्थान, पतन और परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण कारक युवा है। युवा अगर सही दिशा में निर्दिष्ट हो तो राष्ट्र और समाज को विकास के पथ पर अग्रसर कर सकते हैं। इसके विपरीत युवा अगर गलत दिशा की ओर उन्मुख है, तो समाज और राष्ट्र आगे नहीं बढ़ सकता। सामाजिक और नैतिक पतन के परिणाम स्वरूप समाज में जो अव्यवस्था उत्पन्न हुई है, उसने विकल्प की खोज के लिए बाध्य किया है । यदि इन विकल्पों की तलाश स्वामी विवेकानंद की शिक्षाओं में किया जाए, तो यह मानना पड़ेगा कि भारतीय मूल्य और जीवन पद्धति की स्थापना से ही सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था को सुधारा जा सकता है। मूल्यों और आदर्शों की पुनर्स्थापना तभी संभव है जब युवा पीढ़ी मूल्यों और आदर्शों को अपने मन मस्तिष्क में धारित करें। युवाओ मन में मूल्यों और आदर्शों को उतारने का सबसे प्रमुख आधार शिक्षा है। यदि हमारी शिक्षा पद्धति में आदर्श मूल्यों और राष्ट्रीय गौरव का समावेशन होता है, तो जो युवा अपनी ऊर्जा को सड़कों पर उतरकर पत्थर फेंकने में दुरुपयोग करता है, वही युवा अपनी ऊर्जा का उपयोग राष्ट्र निर्माण के कार्य में कर सकेगा ।

हमें यह समझना होगा कि भारत में समाज और शिक्षा का आधार अध्यात्म रहा है। स्वामी विवेकानंद ने हमेशा शिक्षा में आध्यात्मिक प्रवृत्ति पर जोर दिया है। हजारों वर्षों से भारतीय जीवन पद्धति के विकास का आधार भारत में अध्यात्म रहा है। अंग्रेजों के समय से लेकर आजादी के बाद के इतने वर्षों के इतिहास में हमने आध्यात्मिक आधारों को छोड़कर भौतिक आधारों को अपना लिया है। भौतिक आधार और भोगवाद हमारी शिक्षा व्यवस्था में परिलक्षित होते हैं । शिक्षा ज्ञान प्राप्ति, मोक्ष प्राप्ति, जीवन के सत्य को जानने और सामाजिक उन्नयन का आधार ना रहकर मात्र जीविकोपार्जन का आधार रह गई है।

स्वामी विवेकानंद ने भारतीय जीवन पद्धति को समझाते हुए लिखा था कि "पाश्चात्य जगत का साध्य है व्यक्तिगत अधिकार । स्वतंत्रता उसकी साधना है, साधन है राजनीति। जबकि भारत का लक्ष्य मुक्ति है। उसकी साधना है वेदाध्ययन और उसका साधन है निवृत्ति।" हम न केवल अपने साध्य को भूल गए हैं अपितु उसकी प्राप्ति के साधनों को भी भुला दिया है। इस भूल का दोष युवा पीढ़ी का नहीं वरन नीति निर्माताओं का है जिन्होंने समाज और शिक्षा की नीतियों को तैयार किया। पश्चिम से विज्ञान, तकनीकी शिक्षा ग्रहण करना तो सही था। परंतु पूर्ण शिक्षा का ढांचा उन से लेकर भारत पर लागू करना सही नहीं था, क्योंकि यह भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और जीवन प्रणाली के अनुकूल नहीं था। आज सबसे महत्वपूर्ण है शिक्षा में संस्कारों का समावेश। ऐसे संस्कार जो युवाओं को मानवीय दुख दर्द के प्रति संवेदनशील बनाएं उन्हें संयमित बनाए हमें ऐसी शिक्षा प्रणाली अपनानी होगी जो युवाओं में तार्किकता आध्यात्मिकता और वैज्ञानिकता का

समावेश करें इससे व्यक्ति समाज राष्ट्र और विश्व का कल्याण संभव है।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद के जन्मदिवस 12 जनवरी को हमारे देश में "राष्ट्रीय युवा दिवस" के रूप में मनाया जाता है। इसका एक बड़ा उद्देश्य यह है हमारे देश के युवाओं को उनके कार्यों के लिए सजग किया जाए, तथा उनके कार्यों के लिए उनकी सराहना की जाए । वर्तमान में भारत की 70 प्रतिशत जनसंख्या युवा है, अतः मानव संसाधन के रूप में इनका उपयोग बहुत ही लाभप्रद सिद्ध हो सकता है। यदि युवाओं की ऊर्जा और सामर्थ्य को सही प्रकार से नियोजित किया जाए, तो भारत विश्व स्तर पर एक कीर्तिमान स्थापित कर सकता है । स्वामी जी के संदेशों पर चलकर हमें युवा शक्ति को सही रूप में प्रशिक्षित कर हर क्षेत्र में आगे बढ़ना है। अपनी युवा शक्ति का उपयोग करके ही सृजनात्मक शिक्षा के बल पर भारत एक विकसित और शांतिप्रिय राष्ट्र के रूप में स्थान बना सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- विदेहात्मानंद स्वामी, स्वामी विवेकानंद, और उनका अवदान, अद्वैत आश्रम 5 डीही एण्टाली रोड, कोलकाता, मई 2012
- विवेकानन्द स्वामी ''शिक्षा'' रामकृष्ण मठ, नागपुर, एकादश संस्करण ,1979,
- भिशीकर डॉ. स्वर्णलता ''युगनायक'' विवेकानन्द केन्द्र हिन्दी प्रकाशन विभाग, जोधपुर, प्रथम संस्करण, जुलाई 2013,
- शेखर हिमांशु ''स्वामी विवेकानन्द के सपनो का भारत'' डायमण्ड पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण–2014,
- हर्ष मनमोहन, युवाओं के प्रेरक स्वामी विवेकानंद, राजस्थान पत्रिका, जनवरी 2020
- शर्मा भरत ''भरत'' तमसाछन्न संसार को, जागृत! स्मारिका अक्टुबर 2012,
- विवेकानन्द स्वामी ''हे भारत! उठो, जागो!, रामकृष्ण मठ नागपुर, दशम संस्करण, 2013,
- गुप्ता लाल बजरंग भाला लक्ष्मीनारायण ''विवेकानन्द के सपनों का भारत'' प्रभात पेपरबैक्स नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2013,
- बाला डॉ. सुमन "चरित्रवान युवा राष्ट्र की आवश्यकता" शैक्षिक मंथन, जनवरी 2020
- रंगा मधुर मोहन "उपभोक्तावादी संस्कृति और भारतीय युवा" शैक्षिक मंथन, जनवरी 2020
- सिंह डॉ.रणजीत " युवा और अपराध " शैक्षिक मंथन, जनवरी 2020
- बहुगुणा उमा एवं शिवानी " युवा पीढ़ी और मादक द्रव्य व्यसन" श्रंखला